

# अब्राहम बना परमेश्वर का दोस्त

उत्पत्ति 12:1-9; 18:1-19; 22:1-18

अब्राहम और सारा\* ऊर शहर में रहते थे।  
वे यहोवा के उपासक थे। एक दिन यहोवा ने  
अब्राहम से कहा,

उस देश में जा, जो  
मैं तुझे दिखाऊँगा।  
मैं तुझसे एक बड़ा  
राष्ट्र बनाऊँगा।



उसने कहा कि हम यह  
जगह छोड़ दें। हमें अपने  
दोस्तों और रिश्तेदारों को  
छोड़कर जाना होगा।



अब्राहम और सारा ऊर छोड़कर  
निकल पड़े। पर वे यह नहीं  
जानते थे कि कहाँ जा रहे हैं . . .

\*पहले उनके नाम थे, अब्राम  
और सारे।



. . . अब्राहम के बच्चे तो हैं नहीं, फिर  
उससे एक बड़ा राष्ट्र कैसे बन सकता है?

अब्राहम कुछ समय ममरे में रुका। उसने वहाँ तीन आदमी देखे, जो असल में स्वर्गदूत थे।



आइए, हमारे साथ खाना खाइए।



जल्दी करो! थोड़ी रोटियाँ बना लो, मैं गोश्त लेकर आता हूँ।



एक साल के अंदर सारा को एक बेटा होगा।

हम दोनों तो बूढ़े हो गए हैं!



सारा क्यों हँसी? क्या यहोवा के लिए कुछ भी नामुमकिन है?

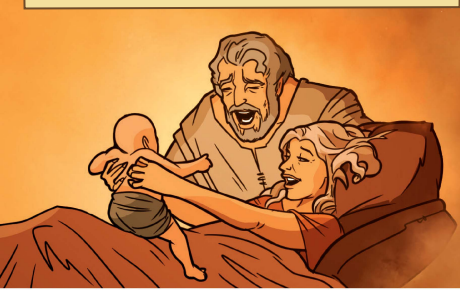
नहीं, मैं नहीं हँसी।

नहीं, तू हँसी थी।

यहोवा का कहा ज़रूर होगा। तुमसे एक बड़ा और ताकतवर राष्ट्र बनेगा।



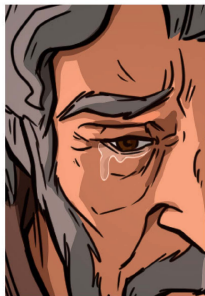
जैसे यहोवा ने कहा था, सारा को बेटा हुआ। उन्होंने उसका नाम **इसहाक** रखा। वह अब्राहम का दुलारा था। धीरे-धीरे इसहाक बड़ा हो गया। उसे **यहोवा से बहुत प्यार था।**



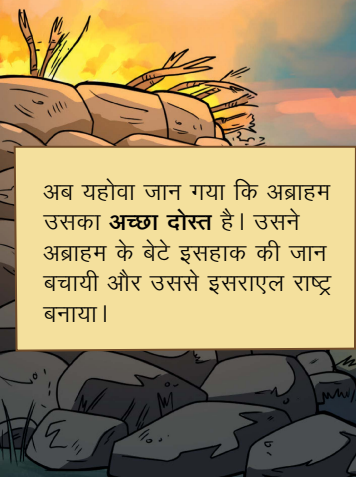
यहोवा अब्राहम को परखना चाहता था। यहोवा ने उससे कहा कि वह इसहाक की **बलि दे।**



अब्राहम के लिए यहोवा की यह बात मानना **बहुत मुश्किल** था। लेकिन उसे और इसहाक को **यहोवा पर पूरा भरोसा** था।



**रुक जा!**



अब यहोवा जान गया कि अब्राहम उसका **अच्छा दोस्त** है। उसने अब्राहम के बेटे इसहाक की जान बचायी और उससे **इसराएल राष्ट्र** बनाया।



**हम इस कहानी से क्या सीखते हैं?**

अब्राहम के लिए यहोवा की कौन-सी बात मानना **बहुत मुश्किल** था?

**सुराग:** उत्पत्ति 12:1; 22:1, 2.

अब्राहम **परमेश्वर का दोस्त** कैसे बना?

**सुराग:** उत्पत्ति 26:5; इब्रानियों 11:8-10, 17.

**आप परमेश्वर के दोस्त** कैसे बन सकते हैं?

**सुराग:** भजन 15:1-5.